प्रस्तावना

वेद विद्या का मायका, तीर्थ उसका सार, वात, पित्त, कफ पर सूक्ष्म उपचार

आधुनिक युग में जीवन की गति तेज हो गई है। मनुष्य की दिनचर्या बदल गई है। उसी के साथ स्वास्थ की समस्याएँ बढ गई है। वनस्पती के जल का आचमन करना, यज्ञ की भस्म लगाना, वनस्पती की पूजा करना, प्रदक्षिणा करना, टीका लगाना ऐसे क्रियाकलापों से सूक्ष्म उपचार होते थे। घर में दादी होती थी, वह घरेलू औषधियाँ देकर स्वास्थ की छोटी – छोटी शिकायते घर में ही ठिक कर देती थी। समय पर उपचार होने से रोग बढता नही था। आज हम भी छोटी – मोटी तकलीफों की ओर दुर्लक्ष करते हैं और बिमारियों के दुश्चक्र में फँसते है।

घरेलू सौम्य उपचार ही सच्चा निरामय आयुष्य का आधार है, यह ध्यान में आनेपर उसके लिए योग्य औषधियाँ बनाने का प्रयत्न वैद्य मामा महाजन ने १९५० के आसपास शुरु किया। घरेलू प्रथमोपचार की औषधियाँ बीमार स्वयं ले सके ऐसी होनी चाहिऐ। विपरीत प्रतिक्रिया से मुक्त, लेने में आसान और बहुगुणी, फिर भी सस्ती होनी चाहिए; इन चार सुत्रों के आधार पर आगोम औषधि का निर्माण हुआ।

वात, पित्त, कफ जैसे लक्षणों पर आधारित उपचार होने से औषधियाँ स्वयं ले सकते है। औषधियाँ सुक्ष्म होने से मात्रा में कम – ज्यादा हो जाए तब भी घबराने का कोई कारण नही।

तुलसी, बेलफल, दूब, वड और पिपर जैसी नियमित प्रयोग के लिए सौम्य होने के साथ व्यापक गुणधर्मोवाली वनस्पतीसे औषधियाँ बनाई जाती है इसलिए ये दुष्परिणोंसे बिलकुल मुक्त है। मिठी गोलियों के स्वरूप मे होने से आगोम की गुटिका लेने मे आसान है।

छोटे बच्चे भी इन्हे खुशी खुशी खाते हैं। ये गोलियाँ सुक्ष्मिकरण के कारण सुक्ष्म स्त्रोतोगामी होने से शरीर में जल्दी ही घुल जाती है। योग्य स्थान पर असर होने से त्वरीत लाभ देती है।

निर्माण प्रक्रिया सरल होने से मूल्य भी कम होते है। इसलिए आगोम की उत्तम दर्जा की औषधियाँ सामान्य लोगों को सस्ती पडती है।

वनस्पती अत्यंत कम मात्रा मे लगती है। इसलिए दुर्लभ वनस्पती की बचत होती है और पर्यावरण का भी रक्षण होता है। ऐसी ये आगोम की अल्प मूल्य की परंतू अधिक गुणवान औषधियाँ हर घर में पहुंची है। ये अपना उद्देश्य सफल करने पर अत्यंत लोकप्रिय हुई है।

आज भी आगोम की औषधियाँ इन्ही चतु:सूत्री के आधार पर ग्राहकों को सेवा देने के लिए तत्पर है। आगोम की "घरका वैद्य" इस पुस्तिका को पढकर आप स्वयं अपने परिवार के आरोग्य का रक्षक बने। स्वास्थ ही सच्ची धन संपत्ती है। समय पर घरेलू आगोम औषधि का प्रयोग करके आप और आपका परिवार सुखी और समृद्ध हो यही धन्वंतरी के चरणों में प्रार्थना है।

संस्थापकजी का मनोगत

शुभारंभ

मेरी वैद्यक विद्या में खास दिलचस्पी, तथा समाज सेवा की बचपन से ही प्रवृत्ती थी। इसका प्रभाव होने से देहात के सब लोगों को प्रथमोपचारी दवा देना मैंने शुरु कर दिया था। कुछ सालों के बाद छात्रों के लिए एक छात्रालय का कार्य करने की जिम्मेदारी मुझपर आयी। छात्रालय में बिमार विद्यार्थीयोंपर उपचार करने पडे। जिससे इस क्षेत्र में मेरा अनुभव तथा आत्मविश्वास बढता गया। विविध प्रणालि की दवाओं का इस्तेमाल किया। लेकिन उसमें कुछ ना कुछ कठिनाई आती थी।

आखिर मे इसके बारे में मेरा यह निश्चित विचार हुआ कि दवा ऐसी हो जो सरल और निर्दोष भी हो। दवा जितनी हो खाद्य पदार्थो से ही बनायी हो। वह जहरीले चिजों से बनायी हुई तथा शरीर को कोई हानी करनेवाली न हो। इस तरह के विचार मन में बार – बार आने लगे।

दवा की तरह – तरह की पद्धतीयों की जानकारी पढते पढते एक बार डॉ. कुलकर्णीजी की लिखी हुई Electro Homoeopathy किताब प्राप्त हुई। जब मैंने वह किताब अच्छी तरह पढी तब मालूम हुआ इस तरह की दवाएँ केवल वनस्पतीयों से बनायी हुई है। कुछ समय बाद डॉ. घोष की लिखी हुई किताब Drugs of Hindusthan मैंने पढी तब मेरे इस अध्ययन को एक नयी दिशा प्राप्त हुई।

सूक्ष्मता में होनेवाले गुणधर्म

वनस्पती के गुणधर्म के बारे में आयुर्वेद में तो बहुत सी जानकारी दी गई है फिर भी हमारे दैनंदिन जीवन में भी इसका अनुभव कई बार आता है, जैसे अडूसा (अरुसा) = कफनाशक गिलोय (गुडुची) = ज्वरनाशक इन वनस्पतीयों की सूक्ष्म (आगम) पद्धतीसे दवाएँ (गोलियाँ) बनाई तो हमे वही गुणधर्म (अडूसा – कफनाशक, गिलोय – ज्वरनाशक) दिखाई दिये। यह एक अद्वितीय सिद्धांत समझ में आया।

सुयोग्य संगम

होमिओपथी की पद्धति से बनाई सब दवाएँ मिठी गोलियों के रुप में खाने के लिए बहुत सुविधाजनक तथा आसान होती है। फिर भी होमिओपथी शास्त्र बहुत जटिल होता है। तथा उसकी चिकित्सा पद्धति भी कठिन होती है। वात, पित्त, कफ इन त्रिदोषोंपर आधारित अपनी आयुर्वेदिक पद्धति आसान है; लेकिन कडुए काढे, चूर्ण, मात्रा आदि से वह बहुत असुविधाजनक है।

सूक्ष्मता मे वही गुणधर्म मिलते है यह जानते हुए आयुर्वेदिक दवाइयोंसे मिठी गुटियाँ बनाने का प्रयास शुरु किया।

आगम पद्धति याने सूक्ष्म आयुर्वेद

आयुर्वेद के अध्ययन के अनुसार वनस्पतीयों का चुनाव करना, होमिओपथी की पद्धति के अनुसार दवाई बनाना याने एक दृष्टी से प्राचिनता तथा आधुनिकता इनका बिलकुल समर्पक संगम (मिलाप), यही हमारी दवा का महत्त्वपूर्ण रहस्य है। पहले – पहले मैंने एकेक वनस्पती की गोलियाँ बनाकर उनके गुणधर्म देखे। प्रयोग सफल हुआ। बाद मे पाठ मे दी गई सभी वनस्पतीयाँ लेकर उनकी गोलियाँ बनायी। पाठ के अुसार उनके भी गुणधर्म दिखाई दिये। इस तरह आयुर्वेदिक कडू काढों की मिठी गोलियाँ बनाने में सफलता मिली।

प्रथमोपचार

घरेलू प्रथमोपचार का उद्देश रखके दवाइया बनाई है। इसलिये ये दवाएँ सौम्य होती है। दवा में जिन वनस्पतीयों का इस्तेमाल किया गया है वे ऐसी कि जिनका उपयोग हम हमारे खाने में तथा जानवरों के खाने में हमेशा करते आये है और ये वनस्पतियाँ बिलकुल जहरिली नही होती। इसलिए यह दवायें कम – ज्यादा या गलती से ली, मिठी गुटियाँ समझ कर बच्चोंने खा ली तब भी कुछ बुरा असर नही होता है।

विशेषता

हमारी दवा की विशेष खासियत यह है कि हमारी कौनसी भी औषधियाँ – (दवाएँ) कोई बुरा असर (Reaction, Side effects) नही करती।

मर्यादा

घरेलू प्रथमोपचार यही प्रधान हेतू होने के कारण दवाएँ बहुत सौम्य होती है। इस पुस्तिका में दिये गये तरह – तरह के विकारों पर (बिमारीयों पर) घरेलू प्रथमोपचार करना इतनी ही अपेक्षा की जाती है। जब बिमारी की तिव्रता अधिक नहीं होती तब दवा का सिमीत उपयोग भी पर्याप्त होता है। फिर भी दवा समयपर मिलना तथा उसका उपयोग करना यही बात महत्त्वपूर्ण है।

एक जगह पर साहित्य में कहा गया है कि बिमारी जब आती है तब हाथी के पाँव से आती है लेकिन जब बिमारी चली जाती है तब चींटी के पाँव से जाती है। मगर बिमारी चींटी के चालसे ही आती है। हमे समझता तक नही। हमे छोटी सी बिमारीयाँ, बेचैनी इत्यादी सहन करने की आदत सी पड गई है। हम लोग खयाल नही देते इसी वजह से आगे चलके बडी बिमारीयाँ पैदा होती है।

प्रभावी बाह्योपचार

जो दवाएँ हम सेवन करते है उन दवाओं का अर्क शरीरपर बाहर से लगा दिया जाये तो त्वचा के रंध्रो से दवा शरीर के अंदर जाती है। इसलिये इंजेक्शन की तरह फौरन पीडा का दर्द कम हो जाता है। वह इंद्रिय मजबूत हो जाते है इसलिए बाह्योपचारार्थ समानधर्मी – तैलार्क सिद्ध किये है।

बहुगुणी दवा

शारिरीक विकृती वात (वायू), पित्त तथा कफ इन त्रिदोषों से होती है। उसके बाह्य आविष्कार अलग – अलग दिखाई देते है। फिर भी उसकी मूल विकृती इन तिनों में ही पायी जाती है। इसलिये तरह – तरह की विकृतियाँ होनेपर उसका मूल कारण एक तत्त्व में ही दिखा जाता है। जैसे बुखार, उष्णता या गरमी, पेशाब की विकृतीयाँ इनका मूल कारण पित्त विकार में ही होता है। इसपर एक ही दवा उपयुक्त होती है। वही अनुभव स्त्रियों के बारे में पाया जाता है। स्त्रीत्व निदर्शक जो शरीर की यंत्रणा तथा ग्रंथी शारिरीक व्यापार अच्छी तरह रखने के लिए कुछ वनस्पतियाँ सहायक होती है। रजस्वला की क्रिया हो या उसका दूसरा रुप गर्भधारणा हो (गर्भवती स्त्री) इन सब अवस्थाओं पर कुछ वनस्पतियाँ अधिक प्रभावशाली होती है। इसलिए उनपर वनस्पति से बनायी हुई एक ही दवा उपयुक्त होती है। भिन्न – भिन्न विकारोंपर एक ही दवा होने का यही रहस्य है। इसलिए हडबडा जाने की कोई आवश्यकता नही। उसका अनुभव लेने से ही यकीन होता है।

कॉम्प्युटर

अपना शरीर यह भगवान ने बनाया हुआ एक स्वयंप्रज्ञ कॉम्प्युटर है। अपना शरीर ठीक रखने के लिए वह सदैव प्रयत्नशील होता है। उसकी कोशिश में उसे थोडी मदद देना यही अपना काम है।

वेदकालीन सिद्धांत

पदार्थ के सूक्ष्मता के गुणधर्म का ज्ञान भारतीयों को वेद काल से है। उसका व्यवहार में उपयोग किये हुए अनेक उदाहरण दिखाई देते है। औषधी वनस्पती का आदमी के आरोग्य रक्षण तथा वर्धन के लिए प्रयोग करने की पद्धत यह इसी बात का निर्देशक है। तुलसी, दूर्वा, बेल, पिपल, उंबर इन वनस्पतियों का ऐसी सूक्ष्म स्वरुप में उपयोग किया गया है। पिपल तथा तुलसी को प्रदक्षणा करने में यही महसूस होता है। इन वनस्पतियों की आसपास की हवा उनके सूक्ष्म द्रव्यों से प्रभावित रहती है। उसमे उनके गुणधर्म होते ही है। अपने शरीर शुद्धी के लिए काफी होते है।

प्रदक्षणा

आदमी चलते समय उस राहपर उस आदमी के शरीर गुणधर्म की सूक्ष्म द्रव्य बाहर निकलती रहती है और वह भारी होने की वजह से २४ घंटो तक उसी जगह रहती है और कुत्ता उसी बाँस से रास्ता ढुँढता है। उसी तरह हर एक वनस्पती, पदार्थ, प्राणी उनके गुणधर्म की सूक्ष्म द्रव्य आसपास फैलाती रहती है। इसका ज्ञान न होता और केवल खुली हवा या व्यायाम यह हेतू प्रदक्षणा करने में रहता तो कोई भी वनस्पती को (आम, झंडू) प्रदक्षणा करने को कहा गया होता। लेकीन वैसा दिखाई नही देता।

यज्ञ

यज्ञ की समीधा भी उसीका उदाहरण है। रुई, पळस, खदिर, आघाडा, पिपल, उंबर, शमी यह वनस्पती समिधा के रुपमें यज्ञ में हवन की जाती है। ये वनस्पतीयाँ अत्यंत व्यापक गुणधर्म की होती है। इसिलिए इनके धुवें से आसपास की हवा आदमी के शरीर को सूक्ष्म द्रव्य से शुद्ध करती है। यज्ञ की विभूती बदन को लगाने से उसके औषधी गुणधर्म की ही प्रचिती आती है।

तीर्थ

बेल, तुलसी, दुर्वा भगवान को अर्पण करके उसपर अभिषेक करके वह पानी तीर्थ समझकर लिया जाता है। तांबे का बर्तन पवित्र मानते हुए उसीमें से पानी पिया जाता है। आपकी मन की शक्ती बढाके जीवन शक्ती को सूक्ष्म रूप से सहाय्य करके अधिक कार्यक्षम बनाने में सूक्ष्म औषधी मदद करती है। हमारे परंपरागत रिवाजों के पिछे छुपा हुआ मर्म जानना जरूरी है। पुराने रिवाज समझकर उसे छोडना नही चाहिए।

सर्वे सन्तु: निरामया:

घरेलू सौम्य उपचार वक्त में करना ही निरामय (रोग मुक्त) जीवन का रहस्य है । हर एक को अपनी कार्य पद्धती सर्वश्रेष्ठ तथा परिपूर्ण लगती है। हर एक कार्यपद्धती में उसकी कुछ विशेषताए तथा अच्छापन होता है, वैसेही बुराइया, खामीया भी होती है।। इसलिए कोई भी एक पद्धती का अभिनिवेष न पकडते हुए अलग - अलग पद्धतीयों से मन को भानेवाला भाग हर एकने लेकर खुद को निरामय रखना चाहिए।

समयपर ही घरेलू उपचार करना यही तंदुरुस्ती का तथा निरोगी जीवन का रहस्य या मर्म है। इसलिए सरल सुविधापूर्ण तथा प्रभावी, हमारी दवाओं का घरेलू तौरपर उपयोग करके ग्राहकों का जीवन आरोग्यपूर्ण हो, यही पसायदान (भगवान का प्रसाद) हमें प्राप्त हो केवल यही भगवान से प्रार्थना।

कै. वैद्य श्री. गो. महाजन

॥ न वैद्यः प्रभुरायुषः ॥

आगोम की औषध योजना

१. अपच; अग्निमांद्य – अपचन, खाना हजम न होना, स्वाद न लगना, बद हजमी की बिमारी। भोजन के पहले करीबन १५ मिनीट गुटिका आगोम की ४ गुटिकाएँ ली जाए। खाने के बाद पचनसुधा की ४ गुटिकाएँ पानी के साथ लेनी चाहिए। संभव हो तो तेल बलवर्धिनी पेट पर लगाना।

२. आवाज मे कठिनाई तथा आवाज बैठना – रामबाण गुटिकाएँ तथा गुटिका आगोम २ – २ इस हिसाब से हर आधे घंटे के बाद लेना आवश्यक होगा। तथा आगोम तेल गले को लगाना भी आवश्यक है। निरामय तीर्थ के पानी से गुलगुली करे।

३. आम्लपित्त – भोजन के पहले गुटिका आगोम की ४ गुटिकाएँ लेनी चाहिए। भोजन के बाद गुटिका पचनसुधा की ४ गुटिकाएँ लेनी चाहिए।

४. आम्लता (ॲसिडीटी, अल्सर) – खाली पेट होते हुए सिप के बाजू मे दर्द होना। गुटिका शमा की ४ गुटिकाएँ रोज ४ बार पानी के साथ लेनी चाहिए। पेट में या जठर में ज्यादा आम्ल (हायड्रोक्लोरिक ॲसिड) होने से यह विकार होता है।

५. आमाँश (आँव) – गुटिका पचनसुधा तथा कृमीना हर एक की ४ गुटिकाएँ हर दस्त के बाद पानी के साथ ली जाए। तेल बलवर्धिनी पेट को अच्छी तरह से लगाया जाए।

६. आमवात – भोजन के पहले १५ मिनट गुटिका संधिशोधना की ४ गुटिकाएँ बिना पानी के ली जाए। तथा भोजन के बाद गुटिका पचनसुधा की ४ गुटिकाएँ पानी के साथ ली जाए। अगर बुखार हो तो गुटिका शमा की ४ गुटिकाएँ पानी के साथ २ बार ली जाए।

७. अगियादन – सुशमा मलम लगाना चाहिए। सुशमा गुटिका की ४ गुटिकाएँ ३ बार देनी चाहिए। मलम लगाना संभवनीय न हो तो आगोम तेल लगाना चाहिए।

८. अत्यार्तव – महिलामृत की ४ गुटिकाएँ हर दिन पानी के साथ ४ बार लेनी चाहिए। महिलामृत तेल तुंदी के निचे के पेट को रजस्वला होने के समय अच्छी तरह लगाया जाए। रजस्वला के वक्त ४० – ४० तक गुटिकाएँ लेनी चाहिए। तथा महिलामृत तेल का इस्तेमाल भी करना चाहिए।

९. बदहजमी – गुटिका पचनसुधा की ४ गुटिकाएँ १५ – २० मिनीटों के बाद पानी के साथ ली जाए। साथ मे बलवर्धिनी तेल भी लगाना चाहिए।

१०. बाल झडना – केशरंजना तेल लगाया जाए। पेट मे केशरंजना गुटिकाएँ ली जाए। रस्सी पर कूदना, तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी पिना, नाखून पे नाखून घीसना, यह लाभदायक है।

११. बालघुट्टी – रामबाण की २ –२ गुटिकाएँ दिन में २ बार लेनी होगी।

१२. बुखार – गुटिका शमा और रामबाण, हर एक की ४ गुटिकाएँ ३ बार दी जाए। तेल शमा सिप पेट को लगा देना।

१३. बिवाई, कुरुप (कॉर्न) – दर्दभरे हिस्से को भिगोकर उसे थोडे पैमाने पर काटना चाहिए।आगोम तेल उसपर अच्छी तरह लगाना चाहिए। बाद मे कपडे की तह (परत) तेल में भिगोकर उसपर बाँधना चाहिए।

१४. सिर का चक्कर – गुटिका शमा तथा गुटिका आगोम की २ – २ गुटिकाएँ लेनी चाहिए। तथा तैलार्क शमा कपार पर तथा सिप पेटपर अच्छी तरह लगाना चाहिए।

१५. दाद – उकवथ (गजकर्ण) – इन विकृतियों पर विकृति की जगह सुशमा मलम रगडकर लगाना चाहिए। चमडी कि विकृति या बिमारी पुर्णतया चली जाने के बाद भी हर दिन एक बार इस हिसाब से ६ महिनों तक मलम लगाना चाहिए। तथा पेट में सुशमा गुटिकाएँ सुबह – दोपहर – शाम हर समय २ – २ के हिसाब से ६ गुटिकाएँ ली जाए।

१६. दोहद (उकौना) – महिलामृत की गुटिकाएँ हर समय ८ से १० के हिसाब से हर दिन ४ – ५ बार बहुत से पानी के साथ ली जाए। महिलामृत और तेल बलवर्धिनी बारी – बारी से पेट को लगा दिया जाए।

१७. दाँत निकलते समय की पीडा – गुटिका बलदा की २ – २ गुटिकाएँ हर दिन में ४ बार देनी चाहिए।

१८. दस्त संग्रहणी – हर एक जुलाब (दस्त) के बाद गुटिका पचनसुधा की ४ गुटिकाएँ पानी के साथ ली जाए। अगर विकृति तीव्र हो तो इसके साथ गुटिका आगोम की २ – २ गुटिकाएँ ली जाए। तथा तेल बलवर्धिनी पेट को अच्छी तरह लगाना चाहिए। पानी बहुत पीना चाहिए।

१९. गलसुआ – आगोम तेल में कपडे की तह भिगोकर लगाना चाहिए। रामबाण की ४ गुटिकाएँ हर दिन ३ बार लेनी चाहिए।

२०. गले में काटना या दर्द होना – रामबाण की ४ गुटिकाएँ ४ बार लेनी चाहिए। आगोम तैलार्क लगाना चाहिए। सर्दी से गले की कुछ बिमारी हो तो तैलार्क कफना लगाना चाहिए। साथ मे गुटिका कफना भी लेना चाहिए।

२१. गर्भपात होना – पाँव भारी होने के बारे में मालूम होने के बाद महिलामृत की २ – २ गुटिकाएँ हर दिन ४ बार लेनी चाहिए। तेल बलवर्धिनी तथा तेल सुबला पेटपर अच्छी तरह हमेशा लगाना चाहिए। गर्भ की वृद्धी अच्छी तरह हो सकेगी।

२२. गर्भाशय की कमजोरी – तेल बलवर्धिनी और सुबला तेल सब पेट को अच्छी तरह लगाना चाहिए। महिलामृत की २ – २ गुटिकाएँ हर दिन ४ बार लेनी चाहिए।

२३. हिचकी – रामबाण तथा आगोम की २ – २ गुटिकाएँ १५ मिनटों के बाद दी जाए। तेल बलवर्धिनी पेट को लगा दिया जाए।

२४. जख्म, जलना – आगोम तेल में कपडे की तह भिगोकर जख्म पर रखना चाहिए। जले हुए हिस्से को आगोम तेल लगाना चाहिए। तथा उसपर कपडे की तह आगोम तेल में भिगोकर बाँधना चाहिए। जले हुए हिस्से पर का दाग भी निकल जाता है।

२५. जोडोंका दर्द –संधिशोधना की ३ गुटिकाए २ बार लेना चाहिए। वातनाशक तेल दर्दभरे जोडोंपर और हो सके तो रीड की हड्डी को दीनमें २ या ३ बार लगाना चाहिए।

२६. जालवात – पाँव गीला करके सुशमा मलम लगाना चाहिए। तथा पेट में सुशमा गुटिकाएँ लेनी चाहिए।

२७. कफ क्षय की बिमारी – गुटिका कफना तथा सुशमा गुटिकाएँ हर एक की २ – २ गुटिकाएँ दिन मे चार बार ली जाए। भोजन के पहले गुटिका आगोम ४ गुटिकाएँ और बाद में रामबाण की ४ गुटिकाएँ लेनी चाहिए। तेल कफना पूरे सीनेपर अच्छी तरह लगाना चाहिए। कफक्षय की बिमारी में अगर बुखार आता हो तो गुटिका शमा की २ – २ गुटिकाएँ कफना के साथ ली जाए।

२८. काँपना – आगोम तेल लगाना चाहिए। जरूरत हो तो कपास की तह तेल में भिगोकर उस हिस्सेपर बाँधना चाहिए। खून बहना बंद हो जाएगा।

२९. कमर दर्द या कसक – आगोम तेल तुंदी पर तथा कमर पर अच्छी तरह लगा दिया जाए। रामबाण तथा गुटिका आगोम की २ – २ गुटिकाएँ हर रोज ४ बार ली जाए।

३०. कै (कै आना) – पचनसुधा की २ तथा शमा की २ गुटिकाएँ इस हिसाब से हर समय कै आने के बाद दी जाए। मुँह को फेन (झाग) आता हो तो पचनसुधा के साथ आगोम की गुटिकाएँ देनी चाहिए। अगर पेट में जहरीली चीजे गयी हो तो पचनसुधा के साथ सुशमा की गुटिकाएँ भी दी जाए।

३१. कफ अटकना – कफना की २–२ गुटिकाएँ ४ बार लेनी चाहिए तथा तेल कफना सब सीने पर अच्छी तरह लगाना चाहिए।

३२. कुकुर खाँसी – गुटिका कफना की २ – २ गुटिकाएँ ४ बार ली जाए। तेल कफना सब सीने को अच्छी तरह लगा दिया जाए।

३३. खुजली – सुशमा की २ – २ गुटिका हर दिन ३ बार लेनी चाहिए। तथा सुशमा मलम लगाना चाहिए।

३४. खरवा – पाँव कपडे से अच्छी तरह पोंछकर सुशमा मलम लगाना।

३५. खाँसी (गिली) – कफना तथा आगोम की ४ – ४ गुटिकाएँ हर दिन ४ बार लेना चाहिए। तेल कफना सीना, पसलियाँ तथा गले को अच्छी तरह लगाना चाहिए।

३६. लार ठपकना, गिरना – रामबाण की २ – २ गुटिकाएँ हर दिन ३ बार लेना।

३७. मसुरिका (खसरा) – गुटिका कफना और गुटिका शमा की हर एक की ४ गुटिकाएँ हर रोज ३ बार लेनी चाहिए। तेल कफना सब सीनेपर अच्छी तरह लगाना चाहिए। इस विकृती में खाँसी होती है। तब सावधानी रखनी चाहिए। मसुरिका का खतरा जाता है, लेकिन बच्चे खाँसी से ही परेशान होते है।

३८. मधुमेह – मेहारी की ४ – ४ गुटिकाएँ रोज २ – ३ बार लेनी चाहिए।

३९. मिट्टी खाने की आदत – गुटिका बलदा की २ – २ गुटिकाएँ ३ बार ले।

४०. मूत्र में जानेवाले अतिरिक्त क्षार – मूत्र के साथ कण निकल जाते है तो भोजन के पहले आगोम की ४ गुटिका, बाद मे रामबाण की ४ गुटिका लेना। पेटपर तैलार्क बलवर्धिनी अच्छी तरह लगाना।

४१. मोटापा – हर दिन सुबह उठने के बाद गुटिका चपला ४ – ६ गुटिकाएँ पानी के साथ ली जाए। तथा चपला तेल रात में सोते समय या स्नान के पहले नाभी पर (तुंदी पर) बहुतसा उँडलकर वह अच्छी तरह लगाना चाहिए। रीड की हड्डी पर भी लगाना चाहिए। तेल शरिर मे सोकना चाहिए।

खाना पिना – खाना नियमित तथा मर्यादित हो। खाना कम करने की आवश्यकता नही। चपला तेल अच्छी तरह लगाना ही एक प्रमुख उपचार है। चपला गुटिका केवल सहाय्यक होती है। कमजोरी रहती नही तथा उमेद बढकर जोश निर्माण होता है।

४२. नाक की हड्डी बढना, नाक भर जाना – इसपर तेल कफना तथा आगोम तेल एकेक बूँद बारी बारी से नाक में डालना चाहिए।

४३. पेट की गर्मी (कडकी) – गुटिका शमा तथा रामबाण की ४ गुटिकाएँ ३ बार लेनी चाहिए। तेल शमा सिप पेट को अच्छी तरह लगाना चाहिए।

४४. पीलिया – भोजन के पहले, आगोम की ४ गुटिकाएँ बिना पानी लेना चाहिए। भोजन के बाद पचनसुधा की ४ गुटिकाएँ पानी के साथ ली जाए। गुटिका शमा की ४ गुटिकाएँ बहुत पानी के साथ हर दिन ३ बार लेनी चाहिए। तथा तेल शमा सिप पेट को अच्छी तरह लगाना चाहिए। इस बिमारी में जितना हो सके ज्यादा पानी पिना चाहिए।

४५. प्लीहा विकार (कवलू) – रामबाण की २ – २ गुटिकाएँ ४ बार ली जाए। तेल शमा सिपपेट को अच्छी तरह लगाना चाहिए।

४६. पेटशूल (पेटसुली) – पचनसुधा की २ – २ गुटिकाएँ १५ मिनटों से देना आवश्यक है। जरूरी हो तो सुशमा गुटिका २ – २ देना।

४७. पित (शित) – शमा तथा सुशमा की ४ गुटिकाएँ रोज ३ बार लेनी चाहिए। बदनपर उठनेवाले दाद पर सुशमा मलम या निरामय तीर्थ लगाना चाहिए।

४८. पेशाब क्रिया मे रूकावट, पेशाब बुंद – बुंद होना – रामबाण तथा शमा की ४ – ४ गुटिकाएँ हर १५ मिनटों के बाद बहुत पानी के साथ दि जाए। तेल शमा सब पेट पर, पीठ के पिछले हिस्से पर अच्छी तरह लगा दिया जाए। गर्मी की पिडा होनेवाले लोगों को हर दिन नीन्द पूर्ण होने के बाद सुबह शमा की ४ गुटिकाएँ पानी के साथ लेनी चाहिए। ऐसा किया तो गर्मी की तकलीफ बिल्कूल नही होगी।

४९. पेट फुलना – गुटिका पचनसुधा और गुटिका आगोम हर एक की २ – २ गुटिकाएँ १५ मिनटों से लेनी चाहिए।

५०. प्रसुति के समय होनेवाली पीडा – महिलामृत की ८ – १० गुटिकाएँ हर १५ मिनटों से लेनी चाहिए तथा तैलार्क महिलामृत और तैलार्क बलवर्धिनी पेटपर अहिस्ते लगाना चाहिए।

५१. तृषा, प्यास लगना – गुटिका शमा तथा रामबाण की ४ गुटिकाएँ ३ से ४ बार पानी के साथ ली जाए।

५२. सर्दी या जुकाम – गुटिका कफना और गुटिका आगोम की ४ – ४ गुटिकाएँ ३ बार ली जाए। तथा तैलार्क कफना कपार, गला और सीने को अच्छी तरह लगा दिया जाए। नाक में २ – २ बूँद कफना तेल डालना चाहिए।

५३. साँस का रोग – उस बिमारी पीडीत आदमी को गुटिका कफना की २ – २ गुटिकाएँ हर दिन ४ बार बहुत पानी के साथ दी जाए। तेल कफना का उपयोग किया जाए। साँस के रोग से जब हाँफनी लगती है तब गुटिका कफना और आगोम की २ – २ गुटिकाएँ हर १५ मिनटों के बाद पानी के साथ दी जाए। तेल कफना सीने पर लगा दिया जाए। साँस की बिमारी की तकलीफ बडे आदमी की कम होती है। छोटे बालकों की साँस की बिमारी पूर्णतया दूर हो सकती है।

५४. सिरदर्द (पित से) – शमा तथा रामबाण की २ – २ गुटिकाएँ आधे – आधे घंटे से लेनी चाहिए। तेल शमा सर को, कपार को सोकना चाहिए। (सर्दी से) कफना तथा आगोम की २ – २ गुटिकाएँ देनी चाहिए। तथा कफना तेल सर, कपार को सोकना चाहिए।

५५. टॉन्सिल्स – भोजन के पहले आगोम की ४ गुटिकाएँ और भोजन के बाद रामबाण की ४ गुटिकाएँ लेना आवश्यक होगा। आगोम तेल गले के बाहर के हिस्सेपर अच्छी तरह लगा दिया जाए। अपचन, जागना इ. टालना चाहिए।

५६. यौवन पिटीका – निरामय तीर्थ के १० बुंद १०० मिली पानी मे मिलाकर लगाए तथा वह पानी दिन में ३ – ४ बार १ – १ चमच पिना चाहिए।

पचनसुधा गुटिका

यह गुटियाँ कुडा (Holarrhena antidysenterica) 3x; बेल (Aegle marmelos) 3x; हरा (Terminalia chebula) 3x इन वनस्पतियोंसे बनायीं गयी है। पेटके सभी दर्दोंपर इसका अच्छा फायदा होता है। पेट में पीडा, पेट फूलना, अतिसार, आँव, हैजा कै (उलटी) इनपर इसका अच्छा उपयोग होता है। बिमारी की तीव्रता के अनुसार, हर समय २ से ४ गुटियाँ हर १५ मिनिटसे दर्दीको देना। बिमारी की तीव्रता जैसै कम हो जायेगी वैसेही गुटियोंकी मात्रा कम की जाए और बीचका समय बढा दिया जाए। अगर पित्त अधिक हो और कै में खट्टा- कडुआपन हो तो गुटियाँ पचनसुधा के साथ गुटियाँ शमा की १-१ गोली दी जाए। बदहजमी, पचनक्रिया में बाधा, आम्लपित्त, पेट फूलना, वायुविकार इन सब बिमारियोंपर भोजन के पहले १५ मिनिट गुटियाँ आगोम की २ गुटियाँ वैसेही ली जाए और भोजन के बाद पचनसुधा की १-२ गुटियाँ (बिमारी की तीव्रता के अनुसार) पानी के साथ ली जाए। हैजा, जहर पीडा इन विकारों से जो कै आती है या जुकाम होता है (रेच या दस्त) इन का प्रतिबंध करने के लिए गुटियाँ पचनसुधा के साथ सुशमा गुटियाँ का उपयोग करना चाहिए।

बलवर्धिनी तैलार्क

यह तैलार्क कुडा (Holarrhena antidysenterica) 3x; बेल (Aegle marmelos) 3x; हरा (Terminalia chebula) 3x इन वनस्पतियोंसे बनाया है। अर्क की बोतल अच्छी तरह हिलाकर १० मि. लि. अर्क १०० मि. लि. नारियल का तेल लेकर उसमें डालकर ५ मिनीट बोतल अच्छी तरह हिला दी जाए। यह तेल स्नायुओं की शक्ती बढाने के लिए बहुत उपयुक्त है। पेटकी विकृतिके लिए गुटियाँ पचनसुधा के साथ तैलार्क बलवर्धिनी का बाह्योपचार की दृष्टीसे उपयोग करना। आँत या आन्त्र की सूजन (शोथ) आनेपर, आँत फूलनेपर या कमजोर होनेपर धीरे धीरे (हलके हातसे) लगाना चाहिए। तेल लगाने का कार्य ६ महिने तक किया जाए। गर्भाशय की वृद्धि अच्छी तरह न होनेसे या वह कमजोर होनेसे अगर गर्भपात होता है, तो पेटके नीचले भाग में यह तैलार्क धीरे धीरे लगाना चाहिए। अगर हृदय कमजोर हो तो यह तेल सीने को लगाना चाहिए। तेल हलके हात से जिराना या सुखाना चाहिए। अच्छा उपयोग होता है। स्नायुओं की थकावट, कमजोरी इसके उपयोग से चली जाती है।

कफना गुटिका

ये गुटियाँ अरूसा (Adhatoda vasica) 3x; घृत कुमारी (Aloe barbadensis) 3x इन वनस्पतियोंसे बनायी गयी है। ये गुटिकाएँ सर्दी, कुकरखाँसी, सूखी खाँसी, साँसक रोग (श्वास रोग) गुर्गुरी, मसूरीका, खसरा,

कफ, तपेदिक, शीतज्वर, फेफडका ज्वर, न्यूमोनियाँ आदि बिमारियोंपर बहुत प्रभावी है। सामान्य तौरसे उपरिनिर्दिष्ट बिमारियोंपर हर समय २ – २ इसी तरह दिन में ८ से १० तक गुटिकाएँ पानी के साथ ली जाए। अगर विकृति या बिमारी अधिक तीव्र तथा दु:सह हो तो हर समय ज्यादा गोलियाँ ली जाए। तथा इनके साथ गुटियाँ आगोम की गोलियाँ भी उसी मात्रा में देना आवश्यक है। साँस के रोग की हाफनी लगनेपर गुटियाँ कफना तथा गुटियाँ आगोम की २ से ४ तक गोलियाँ हर १५ मिनिटोंके अंतर से पानी के साथ ली जाए। जिसे साँस की हाफनी लगती है उसे भी हररोज गुटियाँ कफना और गुटियाँ आगोम हर एक की २ – २ गोलियाँ दिन में ४ बार सुबह, दोपहर, शाम और रातमें देना आवश्यक है। साँस की बिमारीमें तैल कफना का उपयोग करना आवश्यक है। फेफडें के ज्वर में (न्यूमोनियाँ की बिमारी) तथा अन्य कारणों से बुखार आता है तब और सर्दी तथा खाँसी होती है, उसी समय भी गुटियाँ शमा के साथ गुटियाँ कफना की गुटियाँ दी जाएँ। मसूरिका, खसरा की बिमारी शुरू होती है, तब और बिमारी चली जानेपर भी बालक खाँसी से परेशान होता है, इसलिए प्रारंभसेही गुटियाँ शमा और कफना की २ – २ गोलियाँ दी जाए। साथ साथ तैलार्क कफना का उपयोग करने से अधिक आराम मिलता है।

कफना तैलार्क

यह तैलार्क अरूसा (Adhatoda vasica) 3x; घृत कुमारी (Aloe barbadensis) 3x इन वनस्पतियोंसे बनाया गया है। इस अर्क की बोतल हिलाकार १० मि. लि. तैलार्क १०० मि. लि. नारियल तेल में मिला दिया जाए। गुटियाँ कफना के साथ इसका शरीर को बाहयोपचार करना आवश्यक है। उसका गुण फौरन ही दिखाई देता है। कुकर खाँसी, सुखी खाँसी, कफ अटकना, साँसका रोग, कफज्वर न्यूमोनिया, इन्फ्लुएंझा आदि विकारोंपर तैलार्क कफना सीना, पसलियाँ, पीठ आदि शरीर के भोगोंपर धीरे धीरे लगाकार सुखाना। कफ निकल जाएगा और शरीर को आराम मिलेगा। सर्दी तथा शैत्य ठण्डसे माथा ठनकता हो तो माथेपर इस तेल को अच्छी तरह लगाइए।

शमा गुटिका

या इस गुटियोंमें गिलोय (Tinospora cordifolia) 3x; भृंगराज (Eclipta alba) 3x; गिलीर (Ficus glomarata) 3x इन वनस्पतियोंका उपयोग किया गया है। साधा तथा दोषी बुखार, कडकी, मसूरिका (खसरा), मोतीझरा, छोटे चेचक, पीलीया, पित्त के सब विकार, पुराना बुखार, पेशाब की विकृतियाँ इसपर यह गुटियों का अच्छा उपयोग होता है। उपरनिर्दिष्ट विकारोंपर, गुटियाँ शमा २ – २ गुटियाँ हररोज ३ या ५ बार पानी के साथ ली जाए। बुखारमें इनके साथ गुटियाँ रामबाण की २ – २ गोलियाँ लेने से दूसरी किसी भी तरह की विकृति नही हो सकती। न्यूमोनिया, मसूरिका (खसरा)

शमा के साथ गुटियाँ कफना की २ – २ गोलियाँ दी जाए। टायफॉईड, ग्रंथीज्वर आदि दोषपूर्ण बुखारोंमें गुटियाँ शमा के साथ गुटियाँ सुशमा की २ – २ गोलियाँ लेना। आम्लपित्त तथा पिलीया में गुटियाँ शमा के साथ भोजन के पहले १५ मिनिट गुटियाँ आगोम और बादमें गुटियाँ पचनसुधा की ४ – ४ गोलियाँ दी जाए। पित्त से शरीरपर फोडा, फफोला, खुजली आना, सरदर्द आदि विकारोंमें गुटियाँ शमा के साथ गुटियाँ रामबाण की २ – २ गोलियाँ देना जरूरी है। पेशाब की क्रिया अच्छी तरह न होना, उसमे रूकावट, पेशाब अटकना या पेशाब की तकलीफ होना आदि सब तरह की पेशाब विकृतियोंपर गुटियाँ शमा तथा रामबाण की २ – २ गुटियाँ १५ मिनिटों के अंतर से भरपूर पानी के साथ लेना बहुतही फायदेमन्द है। बच्चों का यकृत बिघड जानेपर (लिव्हर डल होना) उन्हे बार बार बुखार आता है तथा शौच सफेद होता है तब गुटियाँ शमा के साथ रामबाण की २ – २ गोलियाँ दी जाए। पित्त से जब कै आती है, तब गुटियाँ पचनसुधा के साथ रामबाण की २ – २ गुटियाँ दी जाए। इनके साथ तैलार्क शमा का भी उपयोग करना बहुत उपयुक्त है।

शमा तैलार्क

यह तैलार्क गिलोय (Tinospora cordifolia) 3x; भृंगराज (Eclipta alba) 3x; गिलीर (Ficus glomarata) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनाया गया है। यह अर्क की बोतल अच्छी तरह हिलाकर, १० मि. लि. तैलार्क १०० मि. लि. नारियल तेलमें मिलाकर उसे ५ मिनीट तक अच्छी तरह हिला दे ताकी मिश्रण अच्छी तरह बन जाए। गुटिका शमा के साथ इसका बाह्योपचार अधिक उपयुक्त होता है। और उसका प्रभाव भी फौरन दिखाई देता है। बुखार आनेपर इस अर्कमें कपडे की पट्टी भिगोकर सिरपर रखने से वायु या वात नही होता और बुखार भी कम होता है। बुखार, घुमरी, मूर्छा या दौर आना आदि बिमारीयोंमें यह तेल पेटपर अच्छी तरह लगानेसे तुरंतही आराम मिलता है और विकृति नष्ट होती है। पित्त से सिरदर्द होता हो तो भी यह तैलार्क सिरपे अच्छी तरह लगाये। मूत्ररोग, पेशाबमें रूकावट, पेशाब अच्छी तरह न होना आदि विकृतियोंपर सब पेटपर तथा पेटके पिछले (कमर) भागपर यह तेल लगानेसे फायदा होता है।

आगोम गुटिका

ये गुटियाँ भिलावा (Semicarpus anacardium) 3x; तूम्बा (Leucas cephalotes) 3x इन वनस्पतीयों के समभाग में बनायी है। यह गुटियाँ वात या वायु की बिमारी पर प्रभावी है। यह गुटियाँ दूसरी दवाओं को मददगार होती है। और शरीर की गरमी कायम रखने लिए उपयुक्त है। आमवात, पेट में वात की बिमारी, जोड या गाठ को दर्द होना, हाथ – पाँव ऐंठना (मुडना), पाँव में दर्द होना, कमर – पीठ का दर्द, बदहजमीकी बिमारी, आम्लपित्त, पीलीया आदि बिमारियोंपर इसका बहुत फायदा होता है। भोजन से पहले १५ मिनिट ४ गुटियाँ ले। बुखार आनेपर तथा अन्य बिमारी में जब वायु होता है या जुडी

अधिक होनेपर तथा शारीरिक कमजोरीपर हाथ – पाँव का चलन ठीक तरह न होनेपर, हाथ – पाँव ठण्डा होनेपर, साँस रोग में हाफनी लगना आदि विकृतियोंपर इसकी २ – ४ गुटियाँ १५ मिनिट के अंतर से दी जाए। कै आते समय अगर मूँह से फेंन आता हो तो पचनसुधा के साथ आगोम की २ – ४ गुटियाँ दी जाए।

आगोम तैलार्क

यह तैलार्क भिलावा (Semicarpus anacardium) 3x; तूम्बा (Leucas cephalotes) 3x इन वनस्पतियोंसे बनाया है। यह अर्क की बोतल अच्छी तरह हिलाकर १० मि. लि. तैलार्क १०० मि. लि. नारियल तेलमें डालकर फिरसे तेल ५ मिनिट तक हिलाना। वात रोगोंमें इसका बहुत उपयोग होता है। सांधा पकडना, दुखना, कमर पकडना, हाथ – पाँवमें झिनझिनियाँ आना, अवधन, गलसूआ (गलेफडा), हाथ–पाँव का दर्द, हाथ–पाँवसे जरूरत से ज्यादा गर्मी या ठण्डाई आना, कमर पीठ का दर्द इन विकृतिपर आहिस्ते – आहिस्ते लगाए। कपास या कपडे की पट्टी तेलमें भिगोकर दर्दभरे भागपर रखनेसे कुछ समय के बाद दर्द की तीव्रता कम होती है। छीपी चोट, रौंदना, कुलचना आदिसे निर्माण होनेवाला दर्द और कटना, जलना, जख्म फोड आदिपर यह तेल लगाइये या कपास की पट्टी इससे भिगोकर उसपर रखिए। कानमेंसे पानी आता है। तब कान कपाससे साफ करके यह तेल के २ – २ बूँद डाले। जख्मसे खून आता हो तो पट्टी उसपर रखे। खून बहना बंद होगा। बैल के कंधेपर छाल या फफोले हो, तो बैल खेती का काम नहीं कर सकता, तभी यह तेल लगानेसे उसकी पीडा दूर होती है। पाँवकी बिवाईको चाकुसे थोडा छीलकर उसपर इस तेल की पट्टी बाँध दी जाए। या यह तेल अच्छी तरह लगा दिया जाए। यह हमेशा घरमें रखने लायक, अत्यंत प्रभावी तेल है।

रामबाण गुटिका

यह गुटियाँ तुलसी (Ocimum sanctum) 3x; बेल (Aegle marmelos) 3x; अरूसा (Adhatoda vasica) 3x; हरा (Terminalia chebula) 3x इन वनस्पतियोंसे बनायी गयी है। छोटे बच्चोंको बालघुटी की तरह हररोज गुटियाँ रामबाण की ४ गुटियाँ दी जाए। आवश्यक हो तो दिन में २ या ३ बार भी दी जा सकती है। इससे बालक पूर्णतया निरोगी रहेगा और उसकी शारीरिक और मानसिक वृध्दी भी अच्छी होगी। पेट फूलनेपर इसकी २ – २ गुटियाँ १५ मिनिटके अंतरसे २ – ३ बार दी जाए। बच्चों को दूध पीने के बाद कै (वांती) आती है तो भी पिलाने के पहिले इसकी २ – २ गुटियाँ दी जाए। अनेक विकृतियोंमें इसका सहाय्यक दवा की दृष्टी से बहुत उपयोग होता है। और अन्य विकृतियाँ होने का संभव नही रहेगा। कभी थकावट से शिथिलता आती हो तो गुटियाँ आगोम के साथ यह २ – २ गुटियाँ भी १५ मिनिट के अंतरसे ३ बार दी जाए। अगर पित्त से सरदर्द हो तो गुटियाँ शमा के साथ इसकी २ – २ गुटियाँ दी जाए। सर्दी तथा अन्य

किसी विकृतिसे सरदर्द हो तो गुटियाँ कफना के साथ इसकी भी २ – २ गुटियाँ दी जाए।

महिलामृत गुटिका

ये गुटियाँ अशोक (Jenosia ashoka) 3x; गुढल (Hibiscus rosasinensis) 3x; अरूसा (Adhatoda vasica) 3x; इन वनस्पतियोंसे बनायी गयी है। महिलाओंका स्वास्थ अच्छा रहनेके लिए बहुत अच्छी दवा है। रजस्वला होने की अनियमितता, रज कम या ज्यादा जाना, उस समय पेट में दर्द होना आदिपर इसकी ४ – ४ करके ८ गुटियाँ पानी के साथ लेना। महिना आनेके समय हर आधे घंटे में विकार कम होने तक ४ – ४ गुटियाँ लेनी चाहिए। गर्भवती को तो यह गुटियाँ जिगर सहेली (सखी) के समान है। उसने शुरूसेही ४ – ४ गुटियाँ दिन में ३ बार लेना। यदि दोहद को (उकिना) तकलीफ ज्यादा होती हो तो विकृति के प्रखरता के अनुसार इसकी ४ से २० तक गुटियाँ १ – १ घंटेसे पानी के साथ लेना। गर्भकाल में अगर पेट में दर्द होगा तो इसकी ८ – ८ गुटियाँ ली जाए। अगर अन्य किसी कारणसेभी पेटमे दर्द होगा तो इनके इस्तेमालसे बंद होगा और प्रसूति भी सुलभ होगी। गर्भपात की खोरी (दोष) हो तो भी यह गुटियाँ लेने से बन्द होगी। यह गुटियाँ के साथ तैलार्क महिलामृत के बाहयोपचार का अच्छा उपयोग होता है। उसे साथ में रखना आवश्यकही होगा। दोहद यह बिमारी नही कही जा सकती। गर्भवती के शरीर में होनेवाला परिवर्तन और गर्भवृध्दीके लिए आवश्यक द्रव्य की कमी इस दोष का दोहद एक तरह का अविष्कार ही है। इसीलिए दोहद में गुटियाँ महिलामृत के साथ तैलार्क महिलामृत का बाह्योपचार करना अधिक लाभदायक होगा। साथ में गुटियाँ सुबला लीजीए।

महिलामृत तैलार्क

यह तैलार्क अशोक (Jenosia ashoka) 3x; गुढल (Hibiscus rosa sinensis) 3x; अरूसा (Adhatoda vasica) 3x; इन वनस्पतियोंसे बनाया है। अर्क की बोतल अच्छी तरह हिलाकर १० मि. लि. तैलार्क १०० मि. लि. नारियल तेल में डालकर ५ मिनिटोंतक अच्छी तरह हिला दिया जाए। मासिक धर्म विकार में गुटियाँ महिलामृत के साथ इसका बाह्योपचार करना प्रभावकारी होगा। पेटके नीचले भाग को यह तेल अहिस्ते – अहिस्ते लगा दिया जाए तो फौरन आराम मिलेगा। गर्भाशय की कमजोरी में गुटियाँ महिलामृत के साथ तैलार्क बलवर्धिनी का उपयोग करना अधिक फायदेमंद होगा।

चपला गुटिका

यह गुटियाँ गुग्गुल (Commiphera mukul) 3x; चित्रक (Plumbago zeylanica) 3x इन वनस्पतियोंसे बनायी गयी है। शरीर की स्थूलता (मोटापन) दूर करके शरीर चपल, सतेज बननेके लिए यह दवा उपयुक्त है। कई

बिमारियोंका उत्पत्तिका मूल कारण यही है की, हम जो खाना खाते है उसका परिवर्तन खूनमें होने के बजाय चरबी में होता है। और शरीर में संचित होती है। अपनी तुन्दी (नाभी) के पीछे मणिपूर चक्र कार्यप्रवण हो तो, यह विकृती चली जाती है। योगासनोंसे यह साध्य होता है। लेकिन योगासन अशक्य हो तो औषधोपचार से भी यह शक्य है यह अनुभवसिध्द बात है। सुबह मूँह धोकर इसकी ४ – ६ गुटियाँ पानी के साथ ली जाए। रात में सोते समय और नहानेके पहले तेल चपला तुन्दीपर बहुत पैमानेपर लगा दिया जाए। सिर्फ गुटियाँ लेना फायदेमंद नही होगा। उपचार शुरू करने के बाद शरीर में चरबी (मेद) कम होने लगती है। और केवल १५ – २० दिनोंमेंही शरीर हलकासा होने लगता है। इस उपचार से कमजोरी नही आती बल्कि उत्साह और कार्यशक्ति बढकर स्थूलता नष्ट हो जाती है, यही इसका सर्वश्रेष्ठ वैशिष्ठ्य है। शरीर में सर्दी अथवा पानी जमा होने से वह पेशाब, पसीना या रेंच के रूप से बाहर निकलता है। ये क्रियाएँ मिटाने के लिए दवा नही लेनी चाहिए। पेशाब, पसीना या रेच बाहर निकलने देना।

चपला तैलार्क

यह तैलार्क गुग्गुल (Commiphera mukul) 3x; चित्रक (Plumbago zeylanica) 3x इन वनस्पतियोंसे बनाया गया है। मेद की बिमारी, स्थूलता तथा जाड्य आदि बिमारियों पर यह प्राथमिक स्वरूप की दवा मानी जाती है। यह अर्क की बोतल अच्छी तरह हिलाकर, १०मि.लि. तैलार्क १०० ग्रॅम नारियल के तेल मे डालकर ५ मिनिटों तक खूब हिलाकर बादमें उपयोग करना चाहिए। हर दिन – रात में सोने से पहले नाभी या तुन्दीपर आहिस्ते आहिस्ते पूरे पेट पर १० – १५ मिनिटोंतक लगाना चाहिए। १५ – २० दिनोंमेही उत्साह बढ जाएगा। शरीर हल्का होकर तथा वजन कम होकर मन अधिक उल्हासित होगा। इस तेल से खानेका परिवर्तन चरबी में न होकर खून में होता है तथा शरीरमेंसे चरबी धीरे धीरे जल जाती है। और स्थूलता कम होती है। इससे शरीर में कमजोरी नही आती बल्कि शारीरिक तथा मानसिक उत्साह बढता है। शरीर की कार्यशक्ति(कार्यक्षमता) बढनेके लिए यह एक प्रभावशली वनौषधि है। शरीर की स्थूलता कम करने के लिए इस तेल का प्रयोग प्रमुख उपचार है, गुटियाँ दुय्यम मानी गयी है। शरीर में मेद (चरबी, मोटाई) बढना, कई बिमारियोंका वासस्थान है। आसनोंसे मणिपूर चक्र कार्यप्रवण करके शरीर में होनेवाला मेद नष्ट किया जा सकता है। लेकिन योगासन करना असंभव हो तो गुटियाँ चपला तथा तैलार्क चपला के उपचार से मेद का नाश किया जा सकता है और अपनी तन्दुरूस्ती निरामय (निरोगी) रखी जा सकती है।

सुशमा गुटिका

यह गुटियाँ प्राजक्ता (Nyctanthus arburtristris) 3x; तुलसी (Ocimum sanctum) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनायी गयी है। शरीर में गहराईतक गये हुये विजातीय द्रव्य, जहर तथा जन्तु इन का उत्सर्जन तथा नष्ट करने का कार्य ये गुटियाँ अच्छी तरह करती है। चमडी की बिमारी में मलहम सुशमा का बाह्योपचार और ४ – ४ गुटियाँ दिन में २ बार पानी के साथ लिया जाए। हैजा की बिमारी में तथा पेट से जहर की पीडा होने से जब कै आती है और रेच, दस्त होते है तब गुटियाँ पचनसुधा के साथ इस की ८ – १० गुटिका लेना चाहिए। तीक्ष्ण दवाईयों का शरीरपर होनेवाला बुरा असर टालने के लिए दिन में ४ बार २ – २ गुटियाँ लेनी चाहिए।

सुशमा मलम

ये मलहम प्राजक्ता (Nyctanthus arburtristris) 3x; तुलसी (Ocimum sanctum) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनाया गया है। लगाने का तरीका – हाथ – पाँव आदि विकार की जगह धोकर गीले भागपरही मलहम लगाइए। खुजली, जलन तथा दाद, खाज, उकवथ आदि चमडी के रोगोंपर इसका अच्छा उपयोग होता है। सुशमा गुटिकाएँ हर समय ४ – ४ करके दिनमें ८ गोलियाँ पानी के साथ लेना आवशयक है। गर्मी से आँखे उठना, आँखे लाल होना, पलकोंकी खुजली आदि बिमारियोंपर इसका अच्छा उपयोग होता है। यह मलहम आँखेपर लगानेसे किसी भी तरह की पीडा नही होती। विशेषता: जाडे के दिनो में पाँव को दरारे (चीरे) दिखाई देती है। जिससे चलनेमे तकलिफ होती है। तब पाँव की उस जगह पानी से धोकर वही गिली जगह पर यह मलहम आहिस्ते आहिस्ते रगडना चाहिये। बिमारी के बाद चमडी अच्छी होनेपर भी यह मलहम ५ – ६ महिनोंतक उसी जगह लगाना चाहिए, कीडों का पूरा निर्मूलन होने के लिए यह आवश्यक है।

बलदा गुटिका

यह गुटियाँ बड (Ficus bengalensis) 3x; केले के दाँत (Banana shoots) 3x इन को समान भाग में लेकर बनायीं है। बच्चो को जब दाँत आते है तब एक तरहकी तकलीफ होती या दर्द होता है, वह दर्द कम होने के लिए बलदा गुटियाँ ४ – ४ करके २ बार लेनी चाहिए। तकलिफ जादा हो तो गोलियोंकी मात्रा बढानी चाहिए। अगर बच्चोंको मिट्टी खानेकी आदत हो तो हर दिन ४ – ४ गुटियाँ सुबह और रातमें सोते समय देना। पेटमें कृमि, कटूदाता (केंचुआ) होनेकी आदत हो तो हरदिन ४ – ४ गुटियाँ सुबह – शाम ५ – ६ महिनोंतक देनेसे कृमि, केंचुआ होने की खोर नही रहेगी।

केशरंजना गुटिका

यह गुटियाँ ब्राम्ही (Centelia asiatica) 3x; भृंगराज (Eclipta alba) 3x; गुढल (Hibiscus rosa sinensis) 3x; बड (Ficus bengalensis) 3x; आँवला (Embilica officinalis) 3x इन वनस्पतियोंसे बनायी है। तैलार्क केशरंजनाके साथ केशरंजना गुटियोंका भी वापर करना अधिक लाभदायी होगा। ४ – ४ गुटियाँ दिन में २ बार पानी के साथ लेनेसे २० – २५ दिनोमेंही बाल गिरना बंद हो जाएगे। बाद में ४ गुटियाँ १ बारही लेना। जिनके बाल मुलत: कम है, उनके बालोंकी वृध्दि ज्यादा नही हो सकती। मगर मुलत: बहुत बाल होनेपर कुछ कारणसे झड गये हो या गिरे हो, उनके बालोंकी वृध्दि बहुत अच्छी हो सकती है। ५ – ६ महिनों के बाद आपको अनुभव होगा की अपने बाल अच्छी तरह बढने लगे है। बालोंकी अच्छी तरह वृध्दि होने के लिये साल – डेढ साल लग जायेगा। बाल में रुसी हो तो आगोम का 'कोंडाना जल' माथेपर अच्छी तरह लगाइये। बालोंको तेल लगाना अत्यावश्यक है। उसका अच्छा उपयोग होता है। बाल काले, सतेज और मुलायम होते है। अगर तेल लगाना असंभवनीय हो तो केवल गुटियोंसेभी फायदा होता है, ऐसा अनुभव है।

केशरंजना तैलार्क

यह अर्क ब्राम्ही (Centelia asiatica) 3x; भृंगराज (Eclipta alba) 3x; गुढल (Hibiscus rosa sinensis) 3x; बड (Ficus bengalensis) 3x; आँवला (Embilica officinalis) 3x इन के समभाग लेकर बनाया है। इसकी बोतल अच्छी तरह हिलाकर १० मि. लि. तैलार्क १०० मि. लि. नारियल तेलमें डालकर फिर वह अच्छी तरह हिलाकर बादमे इस्तेमाल करें। हर वक्त तेलकी शिशी हिलाकर तेल बालो मे लगाईये। यह तेल पूरे माथेपर हलकेसे खूब लगाए। २० से२५ दिनोंमें बाल गिरना बंद हो जाता है। सिर के कुछ भाग के बाल गिर चुके हो तो वहाँ पहले जैसे बाल आयेंगे। और केवल ५ – ६ महिनोंमेही बालोंकी वृध्दि दिखाई देगी। हमेशा तेल लगानेसे बालोंका पकना (सफेद होना) रूक जाएगा। जो बाल एकदम खुरट होंगे वे अच्छे दिखने लगेंगे। जब तक बालोंकी जडे जिन्दा है तब तक बालो की वृध्दि हो सकती है, लेकीन जब ख्वालपरके बालोको छेद (सुराख) बंद हो जाते है ख्वाल चमकदार हो जाते है, तब इसका उपयोग नही हो सकता। अगर बाल गिरने की मात्रा ज्यादा हो या बाल ज्यादा पैमानेपर गिरते हो और केवल तेलसे उसका गिरना बंद नही होता हो तो इसके साथ गुटियाँ केशरंजना पेटमे लेना आवश्यक है। रात को सोते समय सिरपर तथा पाँव के तल भागमें यह तेल लगानेसे अच्छी नींद आती है।

सुबला गुटिका

ये गुटियाँ बादाम (Prunus amygdalus) 3x; बड (Ficus bengalensis) 3x ; दूर्वा (Cynodon dactylon) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनायी है।

कोई भी बिमारी, प्रसूती आदि किसी भी कारण से आयी हुई अशक्तता जाने के लिए इनका टॉनिक (खुराक) जैसा उपयोग होता है। हररोज सुबह और शाम ४ – ४ गुटियाँ एक कप दूध के साथ लेने से दुर्बलता नष्ट हो जाती है। यदि बच्चा दुर्बल होगा तो उसे २–२ गुटियाँ एक कप दूध में रोज २ बार (सुबह और शाम) देनेसे उसकी तबियत सुधर जाती है।

सुबला तैलार्क

यह तैलार्क बादाम (Prunus amygdalus) 3x; बड (Ficus bengalensis) 3x; दूर्वा (Cynodon dactylon) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनाया गया है। बच्चा बदनसे न बढता हो तो गुटियाँ सुबला के साथ इसका बाह्योपचार करें। बोतल हिलाकर १० मि. लि. तैलार्क १०० मि. लि. तेल में मिलाईयें। एरंडी का तेल फायदेमन्द होता है। इससे स्नायू मजबूत होते है। जिन लडकीयों के स्तन छोटे तथा अविकसित होते है, उन्होने यह तेल लगाया तो स्तन पुष्ट हो सकते है। मर्दो का इंद्रिय दुर्बल हुआ हो तो इस तेल के सोकने से इंद्रिय पुष्ट होता है। वीर्य स्थिर होने के लिए इसका उपयोग होता है। गुटियाँ स्तंभना के साथ इसका उपयोग अनिवार्य है। केवल तेल भी फायदेमन्द हो सकता है।

स्तंभना गुटिका

यह गुटियाँ नीम (Azadiracta indica) 3x; शेवरी (Bombax mulabaricum) 3x; बड (Ficus bengalensis) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनायी गयी है। जवानी में निद्रा अवस्था में जो धातु का पतन अधिक मात्रा में होता है उसको रोकने के लिये ४ – ४ गोली दिन में २ बार पानी के साथ लेनी है। जब इस गोली का प्रयोग शुरु करेंगे तब तैलार्क सुबला से शिस्न को मालिश करना अत्यंत जरुरी है।

पयदा गुटिका

यह गुटियाँ शतावरी (Asparagus racemosus) 3x इस वनस्पतीसे बनायी है। यह गुटियाँ लेनेसे माता अपने बालक को ज्यादा दूध पिला सकती है। माताने यह गुटियाँ ४ – ४ करके रोज २ बार १ कप दूध के साथ लेनी चाहिए। छोटे बालक को बाहर का दूध (बेबीफूड) या दूसरा दूध बोतलसे पिलाना यह आजकल की एक फॅशन है। नोकरी करनेवाली माताओं की भी यही तकलीफ है। मगर जागतिक आरोग्य संघटन का कहना है की छोटे बालकों को माताका ही दूध मिलना चाहिए। संघटन का यह भी कहना है की जिस तरह सिगारेट के पैकेटपर ' प्रकृति के लिये हानिकारक ' ऐसा छपाया जाता है। वैसेही बेबीफूड के डब्बेपर छपाना चाहिए। आशा है की माताएँ अपने बालक को ज्यादातर अपना दूध पिलायेगी। संघटन का यह भी कहना है की माताएँ अपने बालकों को ऐसी जड दवा खिलावे नही। आपको ही अपने बालक को संभलना है।

गवांबु गुटिका

यह गुटियाँ गोमुत्र (Gomutra) 3x से बनायी गयी है। जिन विकृतीयों में गोमुत्र का प्रयोग किया जाता है वहा उसके बदले यह गुटियाँ उपयुक्त है। ४ – ४ गोली दिन में ३ बार लेनी है।

कृष्णकेशा गुटिका

यह गुटियाँ भृंगराज (Eclipta alba) 3x; आँवला (Embilica officinalis) 3x; हिना (Lawsonia inermis) 3x; ब्राम्ही (Centelia asiatica) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनायी गयी है। यह गोलियों के साथ तैलार्क कृष्णकेशा का प्रयोग अनिवार्य है। यह औषधी का असर दिखने मे ६ महिने से २ साल तक का कालावधी लग सकता है। आयु एवं प्रकृती पर यह निर्भर है। कृष्णकेशा की ४ गोलियाँ दिन मे २ बार लेनी है। औषधी का असर दिखने के बाद भी गोली लेना जरूरी है।

कृष्णकेशा तैलार्क

यह तैलार्क भृंगराज (Eclipta alba) 3x; आँवला (Embilica offininalis) 3x; हिना (Lawsonia inermis) 3x; ब्राम्ही (Centelia asiatica) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनाया गया है। यह तेल अपायरहित है। तेल बनानेसे पहले तैलार्क की बोतल जोरसे हिलाओ और १० मि. लि. तैलार्क १०० मि. लि. नारियल के तेल में मिलाओ। यह तेल बालोंको लगानेसे पहले बोतल जोरसे हिलाकर बाद में इस्तेमाल करे। रातको सोते समय सिरपर लगानेसे नींद भी अच्छी आती है। कृष्णकेशा तैलार्क के साथ कृष्णकेशा गुटियाँ लेना अत्यावश्यक है। तेल का परिणाम दिखने मे ६ महिनोंसे २ साल तक का अवधि लगता है। विशेष उपचार – इस तेल की १ – १ बूँद रात को सोते समय दोनो नाकपुडियों में डालनेसे बालों का स्वास्थ अच्छा रहता है।

अश्मारी गुटिका

यह गुटिका गोखरू (Tribulas terrestis) 3x; पाषाणभेद (Berjenia ligulata) 3x; पुनर्नवा (Boerhavia diffusa) 3x; कुलत्थ (Dolichos bifiorus) 3x; खस (Vetiveria ziannioides) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनायी गयी है। यह किडणी स्टोन एवं पेशाब करने में होनेवाली वेदना इ. रोगो में इस्तेमाल की जाती है। ८ – १० गोलियाँ १ लिटर पानी में घोलकर वह पानी दिनभर थोडा – थोडा पीना चाहिए। यह दवा के साथ तैलार्क शमा की हलकी मसाज पेटपर करनी चाहिए।

कृमीना गुटिका

यह गुटियाँ विडंग (Embelia ribes) 3x; अनार (Punica granatum) 3x; पलाश (Butea monosperma) 3x; नींबू (Citrus acida) 3x; गिलोय (Tinospora cordifolia) 3x; अर्जुन (Terminalia arjuna) 3x; कुडा (Holarrhena antidysenterica) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनायी है। बच्चोंसे लेकर बुढोंतक सब इसका इस्तेमाल कर सकते है। पेट में होनेवाली सभी कृमीओपर असरदार दवा है। इस दवा का कोई भी बुरा असर नही है।

डोस – १ – ३ वर्ष की आयु के बच्चों को सोते समय २ गुटियाँ १५ दिन लेना।

४ – १० वर्ष की आयु के बच्चों को सोते समय ४ गुटियाँ १५ दिन लेना।

बडों के लिए सोते समय ८ से १० गुटियाँ १५ दिन लेना।

हर ३ महिने बाद यह डोस रिपीट करना है। पेट में होनेवाली कृमी कभी कभी छोटे होते है। आँखो से दिखाई नही देते। कृमी की लक्षणे – बच्चो का पेट फूलना, पेट में दर्द होना, खाँने की इच्छा न होना, थोडा थोडा बुखार आना; बडो मे गुदा में खुजली आना, पेट फूलना, मुह मे पानी आना, लक्षणे दिखते ही औषधी का प्रयोग शुरु करे।

संधीशोधना गुटिका

यह गुटियाँ निर्गुंडी (Vitex nirgundo) 3x; अरंडी (Ricinus communis) 3x; फार (Pluchea lanceolata) 3x इन वनस्पतियोंसे बनायी गयी है। यह गुटियाँ संधिवात मे काफी प्रभावी है। दिन मे २ बार ४ – ४ गुटियाँ गुनगुने पानी के साथ लेनी है। रात को सोते समय और सुबह १ कप गरम पानी लिजिए। इन गुटियोंके साथ वातनाशक तेल दिन मे २ –४ बार लगाईये। ये दोनो औषधीयाँ लेनेसे तुरंत आराम मिलता है।

वातनाशक तेल

यह तेल निर्गुंडी (Vitex nirgundo) 3x; अरण्डी (Ricinus communis) 3x; फार (Pluchea lanceolata) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनाया है। यह तेल जोडों का दर्द, आमवात इन बिमारी में बहुत प्रभावशाली है। जहाँ दर्द या सुजन हो उस ज गहपर यह तेल दिन में ३ बार हलके हात से लगाइए। वातनाशक तेल के साथ गुटियाँ संधिशोधना पेट में लेना जरूरी है। सुबह १ कप गरम पानी पिजीए।

तृणामृत गुटिका

यह गुटियाँ गेंहूँ के जवारें (Wheat grass) 3x से बनायी गयी है। रोगप्रतिकार शक्ती बढाने के लिए गव्हांकुर (तृणामृत) गुटियाँ प्रभावशाली है। ४ गोलियाँ दिन में २ बार लेनी है।

सुखदा गुटिका

यह गुटियाँ सुरण (Amorphophallus capanulutus) 3x; बेल (Aegle marmelos) 3x; हरा (Terminalia chebula) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनायी गयी है। सुखदा गुटियाँ बवासीर, गुदा मार्ग में होनेवाली पिडा इन बिमारिमें प्रभावशाली है। दिन में ४ गोलियाँ २ बार लिजिए। तीखे और मसालायुक्त पदार्थ नही खाने चाहिए। ज्यादा से ज्यादा पानी पिना चाहिए। गुदा मार्ग पर सोते समय और नहाने के बाद 'सुशमा मलम' लगाइए।

मेहारी गुटिका

यह गुटियाँ बिल्व (Aegle marmelos) 3x; नीम (Azadiracta indica) 3x; जामुन (Eugenia jamblana) 3x; अमलतास (Cassia fistula) 3x; विजयसार (Pterocarpus marsupium) 3x इन वनस्पतियोंसे बनायी है। मधुमेह की बिमारी मे यह गुटियाँ लेना लाभदायक है। ४ – ४ गुटियाँ हररोज ३ बार लेना चाहिए। (वैद्य की सलाह ली जाए।)

अभिसारी गुटिका

यह गुटियाँ तुलसी (Ocimum sanctum) 3x; सर्पगंधा (Rouwolfia serpentina) 3x इन वनस्पतियोंसे बनायी है। रक्ताभिसरणमे वात के अवरोधसे रक्तदाब बढता है। इसके अलावा रक्तवाहक नसें प्रबल तथा कमजोर होना यही भी एक कारण है। रुधिराभिसरण में वायु के विकार की प्रतिबंध करना और नसों को कार्यक्षम बनाना यह दोनों तरह के खून के दाब में आवश्यक है। २ – २ गोलियाँ दिन में ४ बार पानी के साथ लेनेपर यह बिमारी कम हो जाती है। (वैद्य की सलाह ली जाए।

निरामय तीर्थ (बहुपयोगी द्रव)

भिलावा (Semicarpus anacardium) 3x; प्राजक्ता (Nyctanthus arburtristris) 3x; तुलसी (Ocimum sanctum) 3x इन वनस्पतीयोंसे यह तीर्थ बनाया है। रक्तशुद्धी, रक्ताभिसरण, त्वचाविकार, शरीर में जहर का फैलाव (असर) इन में उपयुक्त। लेने का तरिका – तीर्थ के ४ बूँद १०० मिली पानी में डालकर २ – २ चम्मच पानी ३ बार पीना और बाहरसे भी लगाना। नाक, कान में तीर्थ का १ – १ बूँद डालिये। सामान्य उपचार – किसी भी दर्दभरे अवस्था या बिमारी में वैद्यकीय सेवा उपलब्ध होने तक इस का आंतरिक तथा बाह्योपचार किजीए। यौवन पिटीका – चेहरा धो कर इस तीर्थ का पानी दिन में ३ – ४ बार लगाइए और थोडा – थोडा पिजीये। ८ – १० दिनोमें ही फर्क दिखाई देगा, दाग तक नही रहेगा। जख्म तथा जलन के दाग भी इससे जाते है।

सुदंती ड्रॉप्स

यह ड्रॉप्स नीम (Azadiracta Indica) 3x; पान (Acacia catechu) 3x; करंज (Pogamia pinnata) 3x; बबूल (Acacia arabica) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनाये है। दाँत एवं मसुडों का स्वास्थ्य रक्षक। दाँत हिलना, दाँत में दर्द, मसुडोंका दर्द, सुजन इत्यादी व्याधी में सुदंती द्रव प्रभावशाली है। सुदंती के ४ – ५ बूंद १ ग्लास पानी में मिलाकर कुल्ला करें और वही पानी मसुडोंपर रगडिये, यह उपचार दिन में २ – ३ बार करे।

सुदंती पावडर

यह पावडर नीम (Azadiracta Indica) 3x; पान (Acacia catechu) 3x; करंज (Pogamia pinnata) 3x; बबूल (Acacia arabica) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनाये है। दाँत एवं मसुडोंको स्वास्थ्य रक्षण में लाभ दायक है सुबह और सोने के पहले इस पावडर दाँत एवं मसुडोंपर अच्छी तरह रगडे और पाँच मिनट वैसाही रखें ।

कोंडाना जल

यह जल निंबू (Citrus acida) 3x; घृत कुमारी (Aloe barbadensis) 3x; नीम (Azadiracta Indica) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनाया है। रूसी बालोंकी सभी समस्याओंका प्रमुख कारण है। रूसी को हटाने के लिए 'कोंडाना जल' सिर की त्वचा को रोजाना लगाइये। ये दवाँ गुलाबजल में बनाई जाती है। इसलिए ये दवाँ लगाने के बाद बाल धोना जरूरी नही है।

चाईना तेल

यह तेल भृंगराज (Eclipta alba) 3x; घृत कुमारी (Aloe barbadensis) 3x; गुढल (Hibiscus rosa sinensis) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनाया है। सिर के बाल झडकर त्वचा (खाल) बिच – बिचमें चमकीली होती है। उसे चाई कहते है। जिस ज गह चाई होती है, वहाँ चाईना तेल दिन में २ – ३ बार रगडिये। एक महिने में फरक दिखाई देगा। चाई के तीव्रता के नुसार उपचार करे।

नस्यामृत

यह दवाँ तुलसी (Ocimum sanctum) 3x; चिरचिरा (आघाडा) (Achyranthes aspera) 3x इन वनस्पतीयोंसे बनायी है। सिरदर्द, मायग्रेन (आधा सिरदर्द) इन बिमारीपर ये दवाँ उपयुक्त है। इसकी १ – १ बूँद नाक में डालियें। तकलिफ ज्यादा होनेपर दिन में २ – ३ बार डाल सकते है। नाक में दवाँ डालते समय पीठ के नि चे तकियाँ ले ताकी दवाँ मुँह में न उतरकर सिधे नाक में चली जाए।